*शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)*
***UGC Aproved Journal No. 40908***

# स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा

**ईश्वर आखुली**
सह अध्यापक
श्री चौतन्य कॉलेज, हावड़ा

***सारांश***

*जब 'शृण्वन्तु विश्वेऽमृतस्य पुत्राः' 'जीवः शिवः शिवो जीवः, स जीवः केवलः शिवः' आदि वेदांत सिद्धांत केवल सार में निर्धारित किए गए थे, तब श्री रामकृष्ण के ज्ञान की अग्नि दक्षिणी भगवान में जल उठी, जिसके स्पर्श से विवेकानन्दरूप अधिक दीप्तिमान होकर संसार का अंधकार दूर हो गया, और जिसके तेज से मनुष्य देवत्व की ओर बढ़ गए।*

*विवेकानन्द के नियम में शिक्षा उन रास्तों की चर्चा है जो मानवता के पूर्ण विकास के लिए मौजूद हैं। शिक्षा का दर्शन मानवता का विकास है। शिक्षा का उद्देश्य आदर्श मनुष्य का निर्माण करना है।स्वामी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल प्रणाली को जातीय प्रणाली के रूप में पहचाना। क्योंकि धर्म शिक्षा का मूल साधन है। स्वामि विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा और धर्म में अंतर है, क्योंकि धर्म शिक्षा की दीवार है। कठोर ब्रह्मचर्य और इंद्रियों का संयम स्वामिविवेकानन्द की शिक्षा के दो आवश्यक अंग हैं। स्वामिविवेकानन्द ने अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम के रूप में शरीर चर्चा, धर्म, विज्ञान, व्यावहारिक विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, साहित्य, भाशा आदि का उल्लेख निर्धारित किया। महिलाओं के लिए शिक्षा जरूरी है, ऐसी शिक्षा जो उनमें आत्मनिर्भरता की भावना पैदा करे। इसीलिए स्वामी का दिलचस सिद्धांत यह है कि महिलाओं को अपनी उन्नति के लिए धर्मशास्त्र, साहित्य, संस्कृत, व्याकरण और अंग्रेजी का अध्ययन करना चाहिए।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
**ईश्वर आखुली**

*स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा*

शोध मंथन,
दिस0 2017,
पेज सं0 155–159
Artcile No. 25 (SM 663)
http://
anubooks.com?page_id=581

## भूमिका

तब महान सनातन हिंदू धर्म की भूमि भारत में पराधीन के निगड मे अमृततुल्य भारतीय गरीब और हीनमानी हो गए थे, पश्चिमी अनुकरणकर्ता बन गए। 'शृण्वन्तु विश्वेऽमृतस्य पुत्राः ष्जीवः शिवः शिवो जीवः, स जीवः केवलः शिवः' आदि वेदान्त सिद्धान्त केवल तत्त्व में ही निर्धारित किये गये हैं और मनुष्य अस्पृश्यता, कुसंस्कार आदि से आच्छादित होकर अशिक्षा तथा कुशिक्षा से पीड़ित हो गये हैं। तब श्री रामकृष्ण के ज्ञान की अग्नि दक्षिणेश्वर में जल उठी, जिसके स्पर्श से विवेकानन्दरूप स्वर्ण अधिक दीप्तिमान होकर संसार का अंधकार दूर कर दिया था। जिसके तेज स मनुष्य देवत्व की ओर बढ़ गए।

आज प्रचलित शिक्षा पश्चिम की नकल है। इसकी शुरुआत सोलहवीं सदी में हुई. इससे पहले शिक्षा व्यक्ति केन्द्रित थी। उस समय शिक्षा व्यक्ति के आधार पर दी जाती थी। अर्थात तब शिक्षार्थियों को व्यक्ति की योग्यता के अनुसार शिक्षा प्रदान कर शिक्षार्थियों का अभ्युन्नति होती थी। लेकिन विभिन्न मध्ययुगीन विद्वानों ने यह ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रणाली को बदल दिया कि इससे सार्वभौमिक प्रगति नहीं होंगी। उनमें से, श्री जॉन अमोस कामेनियास उल्लेख के पात्र हैं। उन्होंने शुरुआत में सभी के लिए आवश्यक शिक्षा की व्यवस्था शुरू की। इसे ही सार्वजनिक शिक्षा कहा जाता है। लोगों की शिक्षा के लिए विद्यालय भी स्थापित किये गये। वे उत्तीर्ण हुए या नहीं, इस पर निर्भर करते हुए, जो लोग स्कूल से बाहर आए, उन्होंने स्वयं को निम्न ज्ञान से बांध लिया। सामाजिक मूल्यों की समझ के कारण वे गुलामी की जंजीर में बंधे हुए थे। जीवन वेद के संस्कार से ही जंजीर कट सकती है। स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक चिंताएँ इसी उद्देश्य की ओर निर्देशित थी।

## स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का स्वरूप

शिक्षा क्या है? वेदांत में मनुष्य प्रारंभ से ही परिपूर्ण है। हालाँकि, विवेकानन्द के सिद्धांत में, शिक्षा उन रास्तों की चर्चा है जो मानवता के पूर्ण विकास के लिए मौजूद हैं। शिक्षादर्श मानवता का विकास है। सामान्य दृष्टि से शिक्षा का अर्थ ज्ञान का शिक्षण है। लेकिन वह संपूर्ण शिक्षण नहीं है. वह तो शिक्षा का एक घटक मात्र है। शिक्षा केवल शब्द सीखना या पाठ याद करना नहीं है, शिक्षा हमारे दिव्य अस्तित्व का विकास है। इसीलिए स्वामविवेकानन्द ने कहा– 'मनुष्यस्यान्तर्निहितायाः पूर्णतायाः विकाशसाधनं हि शिक्षा।' अर्थात् शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित परिपूर्णता को विकसित करने का साधन है। सारा ज्ञान और शक्ति मन के भीतर ही विद्यमान है, बाहर नहीं। हर कोई कहता है कि मिस्टर न्यूटन ने माध्याकर्षण की खोज की थी। क्या वह दुनिया के किसी कोने में छुपकर न्यूटन का इंतजार कर रही थी? नहीं, मिस्टर न्यूटन के मन में यही था। पेड़ से फल का गिरना उनके मन में माध्याकर्षण के तत्व की खोज के लिए प्रेरणा थी, जिसके बाद सभी तथ्यों पर मन में विचार करने के बाद उन्होंने माध्याकर्षण के तत्व की खोज की। इसलिए कहा जा सकता है कि ज्ञान पूर्णतः मस्तिष्क में विद्यमान होता है। शिक्षा का लक्ष्य अज्ञानता को उजागर करना है।

यदि केवल तथ्यों को ग्रहण करना ही शिक्षण का शब्द है, तो दुनिया के महान पुस्तकालय सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान व्यक्ति होंगे, और विश्वकोश सर्वज्ञ संतों की तरह कार्य करेंगे। श्री रामकृष्ण परमहंस ने कहा था कि सीखना जीवन जितना लंबा है। इसका मतलब यह है कि शिक्षा एक आजीवन चक्र है। शिक्षा और धर्म की एकता को स्वीकार करते हुए स्वामी ने कहा – 'मनुष्यस्यान्तर्निहितायाः ब्रह्मत्वस्य

विकाशसाधनं धर्मः' इति। अर्थात् धर्म मनुष्य के अंतर्निहित ब्रह्मत्व को विकसित करने का साधन है। क्योंकि दोनों का उद्देश्य मनुष्य की अंतर्निहित दिव्यता का विकास है।

लेकिन स्वामिविवेकानन्द को यह बात अच्छी तरह से समझ में आ गई कि शिक्षा के बारे में इतना अधिक सोचना मनुष्य के बस की बात नहीं है। इसीलिए उन्होंने शिक्षा की धारणा की ओर संकेत करते हुए कहा – 'येनानुशीलनेन इच्छाशक्त प्रवाहः अभिव्यक्तिश्च नियन्त्रणाधीनमायातस्तथा फलदायी भवतः तदेव शिक्षापदवाच्यम्' इति। अर्थात् वह अध्ययन जिसके द्वारा इच्छा–शक्ति के प्रवाह और अभिव्यक्ति को नियंत्रण में लाया जाता है और फलदायी बनाया जाता है उसे शिक्षा कहा जाता है। संज्ञा का यह विश्लेषण नीचे दिया गया है :

पहला – शिक्षा द्वारा व्यक्ति में सुप्त इच्छाशक्ति को जागृत करना चाहिए और उसे प्रवाहित करना चाहिए। अतः शिक्षा का लक्ष्य मानव निर्माण है।

दूसरा – इच्छाशक्ति का प्रवाह और अभिव्यक्ति को नियंत्रित करना आवश्यक है। उसका क्या उद्देश्य है। कहते है। उसका तात्पर्य सामाजिक कल्याण से है। क्योंकि समाज के बाहर किसी व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है।

तीसरा – शिक्षा वह अध्ययन है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी अंतर्मुखी और बहिर्मुखी दोनों प्रकृतियों में समन्वय स्थापित कर सकता है। अतः शिक्षा व्यक्ति एवं समाज के उत्थान का मार्ग है।

**शिक्षा का उद्देश्य**

शिक्षा का उद्देश्य आदर्श मनुष्य का निर्माण करना है। तो क्या हम इंसान नहीं हैं? हां, हम इंसान हैं, लेकिन आदर्श इंसान और प्रतिभाशाली इंसान नहीं। हमारे चारित्रिक दोश चमकते हैं। शिक्षा का उद्देश्य उन दोषों का निवारण करना तथा उत्कृष्ट गुणों का ग्रहण करना तथा सद्गुणों की शिक्षा देना है। मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य माया के बंधन से मुक्ति है। शिक्षा हमें उस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करती है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षण के साधनों की आलोचना करते हुए कहा था कि शिक्षा अस्थि मज्जा में कछ संस्कार डालने का प्रयास है। शिक्षा का अर्थ कहावतों और उपदेशों को याद रखना नहीं, बल्कि उन्हें अपनाना और जीवन में उतारना है।

न केवल आध्यात्मिक बल्कि लौकिक शिक्षा भी आवश्यक है। जो शिक्षा चरित्र का निर्माण करती है, मन की शक्ति बढ़ाती है, बुद्धि का विकास करती है, आत्मश्रद्धा और आत्म–विश्वास बढ़ाती है वह शिक्षा है। आत्मविश्वास, आस्था, परोपकारिता, पवित्रता, सेवा जैसे सद्गुणों की चर्चा तथा आलस्य, कायरता और मिथ्या आचरण जैसे असद्गुणों से बचने से ही आत्म–विकास संभव है।

यहां तक कि स्वामिविवेकानन्द की नई सामाजिक संस्कृति भी शिक्षा पर निर्भर है। क्योंकि शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः समाज केन्द्रित है।

**शिक्षण पद्धति**

शिक्षण पद्धति सापेक्ष है। जातीय चरित्र के विरुद्ध शिक्षा कभी नहीं ली जाती। भारतीय शिक्षा व्यवस्था धार्मिक है। इसलिए, स्वामी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल प्रणाली को जातीय प्रणाली के रूप प्रणाली को जातीय प्रणाली के रूप में पहचाना। गुरुकुल शिक्षार्थियों के लिए सीखने का आदर्श स्थान है। जो लोग अपना घर–बार छोड़कर गुरुकुल में रहते हैं वे ही सच्चे विद्यार्थी पद के पात्र हैं। विद्यार्थीलक्षण के वारे में कहते है

काकचेष्टा वकध्यानं श्वाननिद्रा तथैव चा
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणः ।। इति।

उन्होंने शिक्षा की इस पद्धति को सार्वजनिक करने का आदेश दिया, जो मानव निर्माण के लिए उपयोगी थी।

**शिक्षा के उपादान**

धर्म शिक्षा का मूल साधन है। स्वामिविवेकानन्द की नई शिक्षा और धर्म में अंतर है। क्योंकि धर्म शिक्षा की दीवार है। स्वामी का मानना है कि शिक्षा प्रणाली के व्यापक उद्देश्य के लिए अन्य उपकरणों के उद्देश्य को बुनियादी इनपुट के पूरक के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। भारतीय शिक्षा प्रणाली के एक घटक के रूप में वेदांत और पश्चिमी विज्ञान का संयोजन आवश्यक है। इसके अलावा, ब्रह्मचर्य, आस्था और आत्मविश्वास शिक्षा प्रणाली के अन्य उपादान हैं। स्वामीजी पश्चिमी विज्ञान में विश्वास रखते थे। स्वामिविवेकानन्द के अनुसार विज्ञान से ही पेट संतुष्ट करने की शिक्षा का जन्म होता है। इसीलिए शिक्षा प्रणाली में विज्ञान धर्म से परे है। यदि संतुष्टि नहीं है तो धार्मिक विचार कैसे होगा? कालिदास ने कहा है– शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । इति । इसीलिए विज्ञान और धर्म स्वामीजी द्वारा संकल्पित शिक्षा प्रणाली की दीवारों के रूप में हैं।

कठोर ब्रह्मचर्य और इंद्रियों का संयम स्वामिविवेकानन्द की नई शिक्षा के दो आवश्यक अंग हैं। इन दोनों का अभ्यास करने से एकाग्रता बढ़ती है, जिससे किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसलिए अगर किसी चीज को एकाग्र मन से पढ़ा जाए तो वह आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

गुरु की शिक्षाओं के प्रति आस्था, विनम्रता और गुरु के प्रति आस्था ही शिक्षा प्राप्ति के साधन हैं। यह भी कहा जाता है, 'श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्' इति। और जहां गुरु और शिष्य के बीच उचित और मधुर संपर्क नहीं होता, वहां कभी भी ज्ञान की सच्ची प्राप्ति नहीं हो सकती। इसीलिए उपनिषद शांति की वाणी का उद्घोष करते हैंः –

ओं सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवाव है।
तेजस्विनावधीतमस्तु।।
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।। इति ।

अंततः शिक्षा पर गुरु का निर्देश है कि शिक्षा प्रकृति से ही लेनी चाहिए। प्रकृति के साथ एकाकार स्थापित करके ब्र के शाश्वत सार से साक्षात्कार संभव है। स्वामिविवेकानन्द के अनुसार यह शिक्षा स्वाभाविक शिक्षा है।

**पाठ्यक्रम**

स्वामिविवेकानन्द द्वारा प्रदर्शित मानव निर्माण शिक्षा का पाठयक्रम व्यापक है। शरीर, मन और आत्मा के सामंजस्यप उत्थान के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे शिक्षा का पाठ्यक्रम माना जाता है। लेकिन स्वामिविवेकानन्द ने अनिवार्य रूप से शरीर चर्चा, धर्म, विज्ञान, व्यावहारिक विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, साहित्य, भाषा आदि का निर्धारित किया शरीर चर्चा का उद्देश्य एक मजबूत शरीर का निर्माण करना तथा मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करना है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि धर्म और विज्ञान

शैक्षिक प्रणाली की दीवारें हैं। व्यावहारिक विज्ञान विज्ञान शिक्षा की पूरक शिक्षा है। अनुप्रयोग विज्ञान के माध्यम से शिल्प का प्रसार हुआ है। ताकि मनुष्य जीविका कमा सके और जीवन यापन कर सके।

**स्त्रीशिक्षा**

स्वामिविवेकानन्द द्वारा प्रदर्शित स्त्री शिक्षा की प्रणाली पुरुष शिक्षा से कुछ भिन्न है। इसका कारण यह है कि एक तो महिलाओं की समस्या अलग प्रकृति की होती है और दूसरे गृहस्थ की उन्नति महिलाओं पर निर्भर करती है। भारत में महिलाओं की मूल समस्या यह है कि वे पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई हैं। विद्यासागर के ने महिलाओं की समस्या को हल करने के लिए 'आइन' की शुरुआत की। लेकिन स्वामि विवेकानन्द ने कहा कि अगर महिलाएं आत्मनिर्भर और एक–दूसरे की मददगार बनें तो समस्या हल हो जाएगी। और इसके लिए महिलाओं की शिक्षा जरूरी है। ऐसी शिक्षा जो उनमें आत्मनिर्भरता की भावना पैदा करे। इसीलिए स्वामी का दिलचस सिद्धांत यह है कि महिलाओं को अपनी उन्नति के लिए धर्मशास्त्र, साहित्य, संस्कृत, व्याकरण और अंग्रेजी का अध्ययन करना चाहिए।

**निष्कर्ष**

भारतीय नवजागरण के नायक स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा वेदांत के अनुसार मानव निर्माण की शिक्षा है। अर्थात् शिक्षार्थियों को गुरु के घर में रहकर गुरु के मुख से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। लेकिन यहां कुछ लोग कह रहे हैं कि ऐसे देश में, जो इस समय गरीबी से जूझ रहा है, भोजन और आश्रय के बिना गरीब छात्र स्कूल कैसे जा सकते हैं? अर्थात् स्वामी विवेकानन्द द्वारा निर्देशित शिक्षाओं को वर्तमान समाज में लागू नहीं किया जा सकता।

दरअसल, शुरू से ही स्वामिविवेकानन्द का उस शिक्षा प्रणाली को पूर्ण रूप देने का कोई इरादा नहीं था जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। उनका प्रारंभिक विचार एक आदर्श शिक्षक संगोष्ठी का निर्माण करना था। यह कहना सुरक्षित है कि वे इसके द्वारा शुरू की गई शिक्षा प्रणाली के वाहक होंगे।

**संदर्भ**

1. चिंतानायक विवेकानन्द, स्वामीलोकेश्वर नन्द द्वारा संपादित, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कलकत्ता
2. विवेकानन्द रचना संग्रह, सुधांशुरंजन घोष द्वारा संपादित, कामिनी प्रकाशनालय, कलकत्ता।
3. श्रीमद्भगवद्गीता, मेधातिथि, उद्बो धनकार्यालय, कलकत्ता द्वारा संपादित
4. ईषाद्याष्टोत्तरशतोपनिषद (शंकर भाष्य सहित), संपा., रमाशंकर पांडे, मोतीलाल वनरसीदास, दिल्ली